।। भीः ।।

चौखम्बा सुरभारती प्रन्थमाला १८८ च्हाइक

शिवोपदिष्टः

विज्ञानभैरवः

श्रीक्षेमराजाचार्यविरचितविवृतिभागोत्तरं श्रीशिवोपाध्यायविरचितविवृत्त्युपेतः

कारिकानुवाद-विवृतिभागस्थहिन्दीच्याख्योपेतः

व्यास्याकार

श्रीबापूलाल 'आअना'

प्रथक्ताः संस्कृत विभाग ज० ला० नेहरू स्मारक पोस्ट-पेंजुएट कालेज महाराजगंज, गोरखपुर



विषय।नुक्रमणिका

	कारिका	नुष्ठाकू
भीरत के स्वकृष के सम्बन्ध में प्रश्न	9-2	9
परमतस्व विषयक आठ प्रश्न	2-x	Ę
परादि शक्तित्रय विधयक प्रश्न	4-10	2,
सकल स्वरूप की असारता	6-93	6
निष्कल स्वरूप की परमार्थता	98-90	*
शिव-शक्ति के स्वकृष का निर्णय	96-39	90
परावस्था की प्राप्ति का उपाय क्या है	22-23	93
क्रमण्ञः ११२ घारणाओं का उपवेश		
प्राणापान विषयक धारणा के षड्विध अर्थ	3.8	13
अध्टविध प्राणायाम	24-30	96
भैरय-मुद्रा का विवेचन	25	29
शान्ता-नामा शक्ति से शान्त-स्वरूप की प्राप्ति	20	33
प्राणापान-वायु की सूदमता से भैरव-स्वरूप की अभिव्य	कि २८	33
प्रतिचक्र में दौहती प्राणवायु का चिन्तन	२९	23
अकारादि द्वादश स्वरों द्वारा द्वादश चक्रों का भेदन	30	२३
वेचरी मुद्रा का साधन	39	5.8
इन्द्रिय-पंचक की शून्यता द्वारा अनुत्तरशून्य में प्रवेश	३२	29
भूत्यता में लीन प्राप्यक्ति	3.5	29
कपालिखंड में मन की एकायता	\$X	२७
चिदाकाशात्मिका देवी का सुपुम्ना नाड़ी द्वारा ध्यान	३५	25
ध्यमक्र के भेदन द्वारा विन्दू में लीन होना	3.5	28
विकल्पों के विनाश हेतु विन्दु का द्वादशान्त में ध्यान	३७	79
नाद (जन्दबहा) भावना	36	38
प्रवादिष्टमन्त्र भावना		
प्रणव व प्युतोचवारण द्वारा भूत्यभाय की धारणा	38	10
वर्ण के आवि-अन्त के चिन्तन द्वारा धून्य का साक्षातका	K Ye	18
नाद-चिम्तन द्वारा परमाकाश की प्राप्ति	*9	11
श्रवीन्द्र, बिन्दु, नाद व नावान्त के अनन्तर शून्छोज्यारण	T YR	- 11

कारिका पृथ्ठाङ्क श्चाय भावना परमञ्ज्य की धारणा द्वारा समग्र आकाश का प्रकाशन 성경 हैं। श्चय के चिन्तन से मन की शून्यता 38 YY ऊर्घ्व मूल और मध्य जून्य के चिन्तन हारा निविधरपता का उदय 84 36 शरीर में क्षणिक शून्यता के चिन्तन द्वारा भी तस्वों की निविकल्पता 88 95 देह के समस्त इच्यों की आकाश से व्याप्ति 80 X0 शरीर की ख़चा की व्ययंता 28 80 चित्त की एकायता द्वारा मात्र चैतन्य की अनुभूति 28 80 दादबान्त में मन की लीनता तथा बुद्धि की स्थिरता 40 89 वृत्तियों की कीणता द्वारा बैलक्षण की प्राप्ति 89 49 कालामिन से स्ववारीर को जलता हुआ मानना 43 89 सारे संसार को विकल्पों से जला हुआ मानना 43 88 संपूर्ण जगत् के तत्त्वों को स्व-स्व कारणों में लय हो जाने का ध्यान करना 88 85 हृदय-चक्र में प्राणशक्ति का ध्यान करना 44 88 वडण्य भावना भवनाध्या के रूप में चिन्तन से मन का रूप हो जाना 83 ५६ अध्व-प्रक्रिया से विश्वतस्य का ध्यान करना 38 419 संसार को शुल्यता में छीन करना 46 X13 अंत:करण में दुष्टि का स्थापन 99 8/3 मध्य भावता द्घिट-बन्धन भावना का निरूपण 60 28 निरासम्ब भावना का वर्णन 49 28 ध्येयाकार भावना . 53 YS. शास्त्री भूमिका-समग्र अरीर व जगत् को जिन्मय विचारना 53 40 अन्तर व बाह्य वायुओं का संघट्टन &A 40 सम्पूर्ण जगत् को आत्मानन्द से परिपूर्ण मानना 44 49 मायीय प्रयोग (कुहन प्रयोग) महानन्द की प्राप्ति 49 प्राणायाम-विवेशन

ना	रिका	वेद्धान्
इन्द्रिय-छिद्रों के निरोध तथा प्राण-शक्ति के उत्थान से		
'परममुख'	83	42
विषस्थान तथा विज्ञस्थान के मध्य में मन को स्थित		
करने शे परम शिव की प्राप्ति	38	99
मुख भावना		
स्त्री-संसर्ग के आवन्द से बह्मतत्त्व की अनुभूति	88	48
स्त्री जन्य पूर्वानुभूत मुखों के समरण द्वारा परमानन्द की		
अनुभूति	100	40
धन एवं बन्धु-बान्धव के मिलने से उत्पन्न आनन्द का ध्यान	199	46
भोजन और पान से उत्पन्न आगन्द का ध्यान	93	46
संगीतावि विषयों के बास्वादन में तन्मयता	७३	49
मनोवांडित संतोष की प्राप्ति के साधनों में मन की स्थिरता	08	50
मनोगोचर अवस्था द्वारा परावेबी का प्रकाशन		
(शांभनी भूमिका)	104	65
सूर्य-वीपक आदि तेज से चित्रित आकाश में दृष्टि को स्थित		
करना	७६	65
कमदर्शन की मुद्राएँ		
करिंदूणी, क्रोधना, लेलिहाना, भैरवी और नेवरी आदि		
मुद्राओं का विवेचन	60	63
कटि-प्रदेश वाले आसन द्वारा ध्यान	6	63
कशाकाश में मन की स्थिर करना	90	50
स्यूलस्य विषय में दृष्टि को स्तब्ध कर मन को निराधित		
वनाना (भैरवी भूमिका)	60	60
जिल्ला को मुँह के बीच में रखकर हकार का उचनारण करन	PSTF	\$15
भयनासन लगाकर खरीर को निराधार समझना	65	38
चंचल जासन पर बैठने पर भी मानम भाव को जांत रखना	123	99
निर्मेल भाकाश में दृष्टि को स्तब्ध करना	SA	23
तिमिर भावना		
भैरवत्व की भावना करना	64	98
ज्ञान, प्रकाश तथा तम (जायत्, स्वप्न व सुपृप्ति) को धैरा	Ţ	
रूप समझनः	८६	100

	कारिका पृष	ভাঙ্গ	
तैमिरी घारणा का निरूपण	23	93	
नेत्र निमीलित कर काले स्वरूप (अंधकार) का जिन्त	न		
करवा	66	७३	
इन्द्रिय निरोध मात्र से अद्वितीय शून्य में प्रवेश	68	७३	
अनुसर (अकार) तस्य का विवेचन			
बिन्दु विसर्ग रहित मात्र अकार का जप	90	60	
विसमें युक्त वर्ण का ध्यान कर चित्त को आधार रहित			
करना	19	90	
अपनी आत्मा का आकाश सद्ध चिन्तन	7.7	13%	
मूची-नोक द्वारा अङ्ग भेदन कर वहाँ चेतना का संयोग	83	60	
चितादि विकल्पों से मुक्ति	48	60	
माया, कला, इच्छा प्रभृति का विवेचन			
विभिन्न तस्वों के विभिन्न धर्मों का आकलन	94	60	
इच्छा के उत्पन्न होते ही उसका शमन	9.5	69	
इच्छा, ज्ञान और क्रिया के सद्ध स्वयं का अस्तित्व न	होना ९७	24	
इच्छा अथवा ज्ञान को आश्मा समझना	96	64	
आधार के बिना ज्ञान को धमात्मक समझना	99	6	
सारे शरीरों को चैतन्यधर्मा आत्मा समझना	900	40	
कामादि आसक्तियों के समय युद्धि को स्थिर करना	909	66	
सारे संसार को इन्द्रजालमय या चित्रकर्म के समान			
समझना	903	66	
मुख और दु:ख के मध्य अवशिष्ट तत्व को पहचानना	907	66	
अहम्भाव (विश्वात्मता)			
'में सर्वत्र विद्यमान हूं' इस भावना का ध्यान	908	6%	
विषय-विज्ञान और इच्छादि को शून्य मानना	904	89	
ग्राह्य-प्राहक रूप की सभी प्राणियों में सामान्य प्रतीति	१०६	99	
जाग्रदादि चार अवस्थाएँ तथा त्रिविध शरीर			
स्वशरीर सद्श परशरीर में भी संवित्ति का अनुभव	100	34	
मन को निराधार कर विकल्प-कल्पनों का त्याग	106	99	
प्रायभिक्षा के द्वितिक हैश्वकन			

*	रिका	गृष्ठा कु
सर्वेश, सर्वेकत्ती, व्यापक और परमेश्वर की स्वयं में प्रतीति	तेप०इ	90
जल की तरंगों और सूर्य के प्रकाश में भैरव की ही		
भिन्नाओं का ध्यान	990	30
शरीर द्वारा विश्वाम की स्थिति में निविकस्य अवस्था का		
उदय	111	22
अशक्ति आदि द्वारा पदार्थों में शक्ति के समावेश से क्षोभ		
को मिटाना	113	- 55
नेत्रों की स्तब्धता द्वारा कैवल्योत्पत्ति	999	77
सिद्धासन द्वारा अन् और हल् रहित अकार के उच्चारण		
से प्रह्म में प्रवेश	998	22
कूपाकाश और महाकाश की एकता का अविकल्प		
मुद्धि द्वारा ध्यान	994	900
सप्तविष समाधि		
बाह्य तथा आभ्यन्तर विषयों में सर्वत्र चैतन्य संविद्य		
का घ्यान	195	900
बाह्याम्यन्तर इन्द्रियों द्वारा अभिव्यक्त पदार्थों में चैतन्य की		
अनुभृति (भरिताबस्था)	990	903
भय-गोक-भुधादि अवस्था में बह्य सत्तामयी अवस्था का		
जनुभव (गाम्भवी भूमिका)	196	908
देखे पदार्थों का स्मरण कर स्वशारीर को आधारहीन बनाना	3.0	908
	920	904
भक्ति-विवेधन		
शाङ्करी शक्ति का नित्य ध्यान	000	onti
एक बस्तु का ध्यान करते हुए अन्य बस्तुओं में	129	904
धूत्यता का व्यान		O a la
शुद्धि व अशुद्धि का स्वक्ष	155	904
युद्धि-अयुद्धि तथा युचि-अयुचि का विचार नहीं करना		*****
साधारण मनुष्यों में भैरव के अर्द्धत का दर्शन	923	206
शतु और मित्र तथा मान और अपमान में समद्दि	128	111
द्वारा बहा की परिपूर्णता की बनुभूति	m 70 c	
रागहेय से मुक्त भाषना की प्राप्ति	139	993
% fire sto	184	111

श्रुत्यता का विवेचन अज्ञेय, अग्राह्य तथा अभाव रूपों में भैरव की भावना करना कह्याकाश में मन की स्थिरता द्वारा आकाश से परे अश्रुत्य में प्रवेश इन्छित वस्तुओं से मन का निरोध कर उसे निश्चल बनाना परे प्रवेश स्वेक स्वक्ष का निरूप्त सर्वेप व्यापक एवं सर्वेशितियाता भैरव शब्द का निरन्तर उच्चारण 'मैं' और 'मेरा' इत्यादि बोधादि विकल्पों से रहित होना नित्य, निराधार, व्यापक, सर्वेश्वर आदि शब्दों का प्रतिक्षण ध्यान इन्द्रजाल धारणा का वर्णन श्रुत्व स्वक्ष का बर्णन स्वक्ष का वर्णन स्वत्य की व्यवस्था संसार को वृद्धि का प्रतिविश्व सानना इन्द्रियों का त्याग कर आत्मिनष्ठ होना प्रवेद प्रवेद भानस, चेतना, प्राणशक्ति और जीवात्मा के परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का ज्ञानी हो जाना प्रवेद धारा व्यक्ति का ज्ञानी हो जाना प्रवेद अपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न ज्य और जयकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न प्रवाता, प्रुकक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न ध्याता, प्रुकक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न ध्याता, प्रुकक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न		कारिका पु	प्टायू
अज्ञेय, अग्राह्म तथा अभाव रूपों में भैरव की भावना करना महाकाश में मन की स्थिरता द्वारा आकाश से परे अग्नुग्य में प्रवेश इन्छित वस्तुओं से मन का निरोध कर उसे निश्चल वनाना परे	श्चाता का विवेचन		
बह्माकाश में मन की स्थिरता द्वारा आकाश से परे अशून्य में प्रवेश इच्छित वस्तुओं से मन का निरोध कर उसे निश्चल बनाना परे १९६ भैरत के स्वक्ष कर निरूपक सर्वंत्र व्यापक एवं सर्वंतितिताता भैरव शब्द का निरन्तर उच्चारण 'मैं' और 'मेरा' इत्यादि वोधादि विकल्पों से रहित होना परेत , निराधार, व्यापक, सर्वेश्वर आदि शब्दों का प्रतिक्षण ध्यान इन्द्रजाल धारणा का वर्णन वन्त्र वास्त्र को व्यवस्था संसार को बुद्धि का प्रतिविष्य मानना इत्द्रियों का त्याण कर आत्मिनष्ठ होना परेद परेद यानस, चेतना, प्राणशक्ति और जीवात्मा के परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का जानी हो जाना परेद धारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या शाप व अनुप्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति जिवन्मुक्त जवस्था की प्राप्ति जिवन्मुक्त जवस्था की प्राप्ति परेव पुत्रत, होम आदि के विषय में देवी का प्रश्न जय और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न जय और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न जय और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न जय और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न जय और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न जय और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न जय और जपकर्ता के सम्बन्ध में प्रश्न पुर्थ पुर्थ			
परे अध्यय में प्रवेश इन्छित वस्तुओं से मन का निरोध कर उसे निश्चल बनाना भरेद के स्वरूप का निरूपण सर्वेत व्यापक एवं सर्वेशितियाता भैरव शब्द का निरन्तर उच्चारण 'मैं' और 'मेरा' इत्यादि बोधादि विकल्पों से रहित होना नित्य, निराधार, व्यापक, सर्वेरवर आदि शब्दों का प्रतिक्षण ध्यान इन्द्रजाल धारणा का वर्णन भूत्य स्वरूप का बर्णन वन्य और मोक्ष की व्यवस्था संसार को बुद्धि का प्रतिविश्व मानना इन्द्रियों का त्याग कर आत्मिनष्ठ होना भीत्र को विवेचन ज्ञान और श्रेय का एकीकरण पानस, चेतना, प्राणशक्ति और जीवात्मा के परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का ज्ञानी हो जाना १२२ १२० प्रारम्पाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या शाप व अनुमह जैसी शक्तियों की प्राप्ति ज्ञय, प्रजा, होम आदि के विषय में देवी का प्रशन जय और ज्ञयकर्त्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जपकर्त्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जपकर्त्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जपकर्त्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जपकर्त्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रशन	भावता करना	920	198
हिन्छत बस्तुओं से मन का निरोध कर उसे निश्चल बनाना भैरव के स्वक्ष का निरूपण सर्वेत्र व्यापक एवं सर्वेशितिदाता भैरव सब्द का निरन्तर उच्चारण भैरें और 'मेरा' इत्यादि बोधादि विकल्पों से रिहत होना नित्य, निराधार, व्यापक, सर्वेश्वर आदि सब्दों का प्रतिक्षण ध्यान इन्द्रजाल धारणा का वर्णन वन्द्रजाल धारणा का वर्णन इन्द्रजाल धारणा का वर्णन स्वक्ष्य का वर्णन संसार को बुद्धि का प्रतिविश्व मानना इन्द्रियों का त्याग कर आत्मनिष्ठ होना भैर १२५ प्रतिक्ष को विवेचन आन और अय का एकीकरण मानस, चेतना, प्राणसिक और जीवात्मा के परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का जानी हो जाना १३९ १२० भिरत्यंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का जानी हो जाना १३९ १४० ११२ धारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या साप व अनुप्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति जीवन्मुक्त अवस्था की प्राप्ति १४० १४० भित्य, सूजा, होम आदि के विवय में वेवी का प्रश्न जप और जपकत्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न जप और जपकत्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न प्रश्न, सूजा, होम आदि के विवय में वेवी का प्रश्न जप और जपकत्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न प्रश्न, सूजक, होस और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४२ १४२	ब्रह्माकाश में मन की स्थिरता द्वारा आकाश से		
निश्चल बनाना १२९ ११६ भैरत के स्वक्ष का निरूपक सर्वत्र व्यापक एवं सर्वेशित्तवाता भैरव शब्द का निरुत्तर उच्चारण 'मैं' और 'मेरा' इत्यादि बोधादि विकल्पों से रिहत होना नित्य, निराधार, व्यापक, सर्वेश्वर आदि शब्दों का प्रतिक्षण व्यान इन्द्रजाल धारणा का वर्णन इन्द्रजाल धारणा का वर्णन व्यव्य और सोक्ष की व्यवस्था संसार को बुद्धि का प्रतिविध्य सामना इन्द्रियों का त्याग कर आत्मिनष्ठ होना भेर १२५ प्रतिक्षण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का जानी हो जाना १३८ १२० भिरत्यंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का जानी हो जाना १३८ १२० ११० १२८ प्रात्म, चेतना, प्राण्याक्ति और जीवात्मा के परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का जानी हो जाना १३८ १४० १४२ १४९ प्रमा, सुना, होम आदि के विषय में वेवी का प्रश्न जप और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न व्याता, पूजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४२ १४९	परे अशून्य में प्रवेश	986	998
भेरव के स्वक्ष का निक्षण सर्वत्र व्यापक एवं सर्वेशिताता भैरव शब्द का निरन्तर उच्चारण 'मैं' और 'मेरा' इत्यादि बोधादि विकल्पों से रिहत होना नित्य, निराधार, व्यापक, सर्वेश्वर आदि शब्दों का प्रतिक्षण ध्यान इन्द्रजाल धारणा का वर्णन वन्द्र वश्वर का वर्णक क्षान बौर मोक्ष की व्यवस्था संसार को मुद्धि का प्रतिविध्य मानना इन्द्रियों का त्याग कर बात्मनिष्ठ होना भीवन्तुत्ति का विवेषक श्रान और जेय का एकीकरण मानस, चेतना, प्राणशक्ति और जीवातमा के परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का जानी हो जाना १२९ १२८ मानस, चेतना, प्राणशक्ति को का निस्तरंग निर्म भैरव हो जाना या धाप व अनुत्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति जीवन्मुक्त जवस्था की प्राप्ति जय, प्रजा, होम आदि के विषय में वेवी का प्रशन जय और जयकत्ती के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जयकत्ती के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जयकत्ती के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जयकत्ती के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जयकत्ती के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जयकत्ती के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जयकत्ती के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जयकत्ती के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जयकत्ती के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जयकत्ती के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जयकत्ती के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जयकत्ती के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जयकत्ती के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जयकत्ती के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जयकत्ती के सम्बन्ध में देवी का प्रशन जय और जयकत्ती के सम्बन्ध में देवी का प्रशन	इच्छित वस्तुओं से मन का निरोध कर उसे		
सर्वत्र व्यापक एवं सर्वशक्तिदाता भैरव शब्द का तिरत्तर उच्चारण 'मैं' और 'मेरा' इत्यादि बोधादि विकल्पों से रहित होना तित्य, निराधार, व्यापक, सर्वेश्वर आदि शब्दों का प्रतिक्षण ध्यान इन्द्रजाल धारणा का वर्णन वृत्व न्दर पर्श्व स्वत्य का वर्णन वृत्व का वर्णन संसार को बुद्धि का प्रतिविश्व मानना इन्द्रियों का त्याग कर बात्मनिष्ठ होना भैर पर्श्व भानस, चेतना, प्राण्याक्ति और जीवात्मा के परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का जानी हो जाना पृश्व प्रविव्यक्ति का विवेशन श्रान और श्रेय का एकीकरण मानस, चेतना, प्राण्याक्ति और जीवात्मा के परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का जानी हो जाना पृश्व धारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या धाप व अनुग्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति जय, पूजा, होम आदि के विवय में देवी का प्रश्न जय और जयकत्तां के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न जय और जयकत्तां के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न जय और जयकत्तां के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न जय और जयकत्तां के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न व्याता, पूजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न पृश्व पृश्व	निभ्रल बनाना	256	998
सर्वत्र व्यापक एवं सर्वशक्तिदाता भैरव शब्द का तिरत्तर उच्चारण 'मैं' और 'मेरा' इत्यादि बोधादि विकल्पों से रहित होना तित्य, निराधार, व्यापक, सर्वेश्वर आदि शब्दों का प्रतिक्षण ध्यान इन्द्रजाल धारणा का वर्णन वृत्व न्दर पर्श्व स्वत्य का वर्णन वृत्व का वर्णन संसार को बुद्धि का प्रतिविश्व मानना इन्द्रियों का त्याग कर बात्मनिष्ठ होना भैर पर्श्व भानस, चेतना, प्राण्याक्ति और जीवात्मा के परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का जानी हो जाना पृश्व प्रविव्यक्ति का विवेशन श्रान और श्रेय का एकीकरण मानस, चेतना, प्राण्याक्ति और जीवात्मा के परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का जानी हो जाना पृश्व धारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या धाप व अनुग्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति जय, पूजा, होम आदि के विवय में देवी का प्रश्न जय और जयकत्तां के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न जय और जयकत्तां के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न जय और जयकत्तां के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न जय और जयकत्तां के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न व्याता, पूजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न पृश्व पृश्व	भैरव के स्वक्प का निक्पण		
निरतर उच्चारण 'मैं' और 'मेरा' इत्यादि बोधादि विकल्पों से रहित होना नित्य, निराधार, व्यापक, सर्वेश्वर बादि शब्दों का प्रतिक्षण व्यान इन्द्रजाल धारणा का वर्णन यून्य स्वरूव का वर्णन संसार को बुद्धि का प्रतिबिग्ध मानना संसार को बुद्धि का प्रतिबिग्ध मानना इन्द्रियों का त्याग कर आत्मिन्छ होना अोबन्मुक्ति का विवेषन आन और श्रेय का एकीकरण यानस, चेतना, प्राणशक्ति और जीवातमा के परिस्तीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का ज्ञानी हो जाना १३८ १३० ११२ धारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या शाप व अनुप्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति जीवन्मुक्त जवस्था की प्राप्ति अथ १४२ प्रथ १४२ इयाता, प्रजक, होम आदि के विषय में देवी का प्रश्न जय और जपकर्त्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न व्याता, प्रजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४३ १४२			
रहित होना नित्य, निराधार, ज्यापक, सर्वेश्वर आदि शब्दों का प्रतिक्षण ज्यान इन्द्रजाल धारणा का वर्णन श्वर १२३ श्वर्ण स्वरूप का बर्णन वन्य और मोक्ष की व्यवस्था संसार को बुद्धि का प्रतिविश्व मानना इन्द्रियों का त्याग कर बात्मनिष्ठ होना भेद १२७ भीवन्युक्ति का विवेशन आन और जेय का एकीकरण मानस, चेतना, प्राणशक्ति और जीवात्मा के परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का ज्ञानी हो जाना १२८ १३० ११२ धारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या शाप व अनुप्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति जय, पूजा, होम आदि के विषय में वेबी का प्रश्न जय और जपकर्त्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न जय और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न प्रश्न, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४३ १४९		930	993
रहित होना नित्य, निराधार, ज्यापक, सर्वेश्वर आदि शब्दों का प्रतिक्षण ज्यान इन्द्रजाल धारणा का वर्णन श्वर १२३ श्वर्ण स्वरूप का बर्णन वन्य और मोक्ष की व्यवस्था संसार को बुद्धि का प्रतिविश्व मानना इन्द्रियों का त्याग कर बात्मनिष्ठ होना भेद १२७ भीवन्युक्ति का विवेशन आन और जेय का एकीकरण मानस, चेतना, प्राणशक्ति और जीवात्मा के परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का ज्ञानी हो जाना १२८ १३० ११२ धारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या शाप व अनुप्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति जिवन्मुक्त अवस्था की प्राप्ति अप, पूजा, होम आदि के विषय में वेवी का प्रश्न जप और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न जप और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न विवन्युक्त, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४३ १४९	'मैं' और 'मेरा' इत्यादि बोधादि विकल्पों से		
नित्य, निराघार, ज्यापक, सर्वेश्वर आदि शब्दों का प्रतिक्षण ध्यान इन्द्रजाल धारणा का दर्णन श्चर्य स्वरूप का वर्णन व्यास्त्र का वर्णन व्यास्त्र को व्यास्त्र व्यास्त्र विवास मानना संसार को बुद्धि का प्रतिविश्व मानना इन्द्रियों का त्याण कर आत्मिनष्ठ होना विश्व का विवेषम श्चान और जेथ का एकीकरण मानस, चेतना, प्राणशक्ति और जीवात्मा के परिलीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा ध्यक्ति का ज्ञानी हो जाना १३८ १३० ११२ धारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या शाप व अनुप्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति जिवन्मुक्त अवस्था की प्राप्ति अप, पूजा, होम आदि के विषय में वेवी का प्रश्न जप और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न प्रश् १४३ १४२		939	930
का प्रतिक्षण ध्यान इन्द्रजाल घारणा का वर्णन यून्य स्वरूप का वर्णन वन्य और मोक्ष की व्यवस्था संसार की बुद्धि का प्रतिविम्य मानना इन्द्रियों का त्याग कर बात्मनिष्ठ होना वन्य और प्रेय का एकीकरण मानस, वेतना, प्राणयक्ति और जीवात्मा के परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का ज्ञानी हो जाना प्रश् प्रत्यामां में में किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या घाप व अनुप्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति जय, प्रजा, होम आदि के विषय में देवी का प्रक्त जय और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रक्त विया, प्रजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रक्त १४३ १४२	नित्य, निराधार, व्यापक, सर्वेश्वर आदि शब्दों		
इन्द्रजाल घारणा का वर्णन पून्य स्वरूप का वर्णन बन्य और मोक्ष की व्यवस्था संसार की बुद्धि का प्रतिविश्व मानना इन्द्रियों का त्याग कर आत्मिनष्ठ होना भीव-मुित का विवेधन शान और सेय का एकीकरण मानस, चेतना, प्राणशक्ति और जीवात्मा के परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का ज्ञानी हो जाना १३८ १३० ११२ १४० ११२ घारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या शाम व अनुग्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति अप, पूजा, होम आदि के विषय में देवी का प्रश्न जप और जपकत्तां के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न प्रश्न १४२ १४९ इयाता, पूजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४३ १४२		932	922
मृत्य स्वरूप का वर्णन बन्य और मोक्ष की व्यवस्था संसार को गुद्धि का प्रतिविष्य मानना इन्द्रियों का त्याग कर आत्मनिष्ठ होना भीवन्युक्ति का विवेचन ज्ञान और श्रेय का एकीकरण मानस, चेतना, प्राणशक्ति और जीवात्मा के परिसीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का ज्ञानी हो जाना १३८ १३० ११२ धारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या शाप व अनुप्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति जय, पूजा, होम आदि के विषय में वेवी का प्रश्न जय और जपकर्त्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न प्रश्न १४२ १४९ हयाता, पूजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न	इन्द्रजाल धारणा का वर्णन		
संसार को बुद्धि का प्रतिविम्ब मानना १३५ १२५ इन्द्रियों का त्याग कर बात्मनिष्ठ होना १३६ १२७ जीवन्मुत्ति का विवेचन अन और जेय का एकीकरण १३७ १२८ मानस, चेतना, प्राणशक्ति बीर जीवात्मा के परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति १३८ १३० विस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का जानी हो जाना १३९ १४० ११२ धारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या शाप व अनुग्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति १४० १४९ जीवन्मुक्त जवस्था की प्राप्ति १४१ १४१ जय, प्रजा. होम आदि के विषय में वेदी का प्रश्न जप और जपकर्त्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न १४२ १४९ ध्याता, प्रजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४३ १४२	शून्य स्वरूप का वर्णन		
इन्द्रियों का त्याग कर आत्मनिष्ठ होना १३६ १२७ जीवन्युत्ति का विवेचन ज्ञान और जेय का एकीकरण १३७ १२८ मानस, वेतना, प्राणशक्ति और जीवात्मा के परिसीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति १३८ १३० निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का ज्ञानी हो जाना १३९ १४० ११२ धारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या शाप व अनुग्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति १४० १४९ जावन्मुक्त जवस्था की प्राप्ति १४० १४९ जप, पूजा, होम आदि के विवय में देवी का प्रश्न जप और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न इयाता, पूजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४३ १४९	बन्व और मोक्ष की व्यवस्था		
जीवन्मुक्ति का विवेचन ज्ञान और जेय का एकीकरण परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का ज्ञानी हो जाना १३८ १३० निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का ज्ञानी हो जाना १३९ १४० ११२ धारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या शाप व अनुप्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति श्रिष्ठ १४९ जय, पूजा, होम आदि के विषय में वेवी का प्रश्न जय और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न वप और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न १४२ १४९ ध्याता, पूजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४३ १४२	संसार को बुद्धि का प्रतिविम्ब मानना	934	924
श्रान और श्रेय का एकीकरण मानस, नेतना, प्राणशक्ति और जीवातमा के परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का ज्ञानी हो जाना १३९ १४० ११२ धारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या शाम व अनुग्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति नीवन्मुक्त अवस्था की प्राप्ति १४९ १४९ जय, पूजा, होम आदि के विषय में वेवी का प्रश्न जय और जयकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न १४२ १४९ ध्याता, पूजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४३ १४२	इन्द्रियों का त्याग कर आत्मनिष्ठ होना	935	970
मानस, चेतना, प्राणशक्ति और जीवातमा के परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का ज्ञानी हो जाना १३९ १४० ११२ धारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या शाप व अनुग्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति शिवन्मुक्त अवस्था की प्राप्ति १४० १४९ अप, पूजा, होम आदि के विषय में वेवी का प्रश्न जप और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न १४२ १४९ ध्याता, पूजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४३ १४२	जीवन्युत्ति का विवेचन		
परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति १३८ १३० निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का ज्ञानी हो जाना १३९ १४० ११२ घारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या शाप व अनुग्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति १४० १४१ जीवन्मुक्त अवस्था की प्राप्ति १४१ १४१ जप, प्रजा, होम आदि के विषय में देवी का प्रश्न १४२ १४१ घराता, प्रजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४३ १४२	ज्ञान और क्षेय का एकीकरण	930	936
निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का ज्ञानी हो जाना १३९ १४० ११२ धारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या शाप व अनुप्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति १४० १४१ जीवन्मुक्त अवस्था की प्राप्ति १४१ १४१ जप, पूजा, होम आदि के विषय में देवी का प्रश्न जप और जपकर्त्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न १४२ १४२ ध्याता, पूजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४३ १४२	मानस, चेतना, प्राणशक्ति और जीवात्मा के		
११२ घारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भैरव हो जाना या शाप व अनुग्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति १४० १४१ जीवन्मुक्त अवस्था की प्राप्ति १४१ १४१ जय, पूजा, होम आदि के विषय में देवी का प्रश्न जय और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न १४२ १४१ घ्याता, पूजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४३ १४२	परिक्षीण होने पर भैरवावस्था की प्राप्ति	976	930
हो जाना या शाप व अनुग्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति १४० १४१ जीवन्मुक्त अवस्था की प्राप्ति १४९ १४९ जिप, पूजा, होम आदि के विषय में वेबी का प्रश्न जप और जपकर्त्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न १४२ १४९ ध्याता, पूजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४३ १४२	निस्तरंग उपदेशों द्वारा व्यक्ति का ज्ञानी हो जाना	939	980
जीवन्मुक्त जवस्था की प्राप्ति १४९ १४९ जय, पूजा, होम आदि के विषय में वेबी का प्रश्न जय और जयकर्त्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न १४२ १४९ ध्याता, पूजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४३ १४२	११२ धारणाओं में से किसी एक द्वारा स्वयं भीरव		
जप, पूजा, होम आदि के विषय में वेबी का प्रश्न जप और जपकर्त्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न १४२ १४२ ध्याता, पूजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४३ १४२	हो जाना या शाप व अनुग्रह जैसी शक्तियों की प्राप्ति	980	989
जप और जपकर्ता के सम्बन्ध में देवी का प्रश्न १४२ १४१ ध्याता, पूजक, होन और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४३ १४२	नीवन्मुक्त जवस्था की प्राप्ति	989	989
ध्याता, पूजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न १४३ १४२	जप, पूजा, होम आदि के विषय में वेवी का प्रशन		
		982	989
इन प्रक्तों का भैरव हारा उत्तर १४४ १४२	ध्याता, पूजक, होम और याग के सम्बन्ध में प्रश्न	424	988
	इन प्रक्तों का भैरव हारा उत्तर	488	988

	कारिका	पुष्ठाकु
जप और जपनीय का स्वरूप	984	988
ध्यान का स्वरूप	9×4	TYP
अजपा जप-विधि		
अन्त:करण-चतुष्टय का चिदाकाश में लय होना		
ही पूजा है	980	9×3
किसी एक धारणा स्थिति ही तृप्ति है	286	984
होम का स्वरूप	988	484
याग का स्वरूप 94	0, 949	988
वास्तविक स्नान का स्वरूप	943	980
बाह्य पूजा की निस्सारता (पूज्य-पूजक का अभेद)	943	980
प्राणापान स्वरूप परावस्वा	948	980
जीव द्वारा परम भैरवता की प्राप्ति	- 944	980
इवास-प्रश्वास स्वरूप जप की प्राणान्त में दुलंभता	945	980
प्रत्य की कलध्रुति		
अध्यात्मशास्त्र की गोपनीयता	940	948
उपदेश प्रदान करने से पूर्व पात्रता-अपात्रता का विचार	946	944
अस्थिर वस्तुओं के त्याग से परमपद की प्राप्ति	949	944
प्राणों से भी श्रेष्ठ परमामृत	950	945
देवी द्वारा शंकाओं के समाधान की प्राप्ति तथा		
शिव के साथ एकीकरण १६	9-943	940
প্লोকানুকদণিকা		945
वरिशिष्ट		
(क) शन्दानुकमणिका		163
(ख) संस्कृत टीका व हिन्दी व्याख्या में उद्भृत श्लोका		1 904
(ग) विवृति और कौमुदीकार की कारिकाओं में पाठा	भेद	960
(घ) सहायक ग्रन्थ-सूची		161